कई मुख बानी बोलत, अतंत मीठी जुबान।
अति सुन्दर हैं सोहने, क्यों कर कीजे बयान।। १५ ।।

यहां के जानवर मीठी जबान से मधुर वाणी बोलते हैं। देखने में अति सुन्दर सुहावने हैं। इसकी हकीकत का बयान कैसे करें?

कई खेलत करत लड़ाइया, कई कूदत कई फांदत।
उड़के कई देखावहीं, कई बानी बोल रिझावत।। १६ ।।

कई जानवर लड़कर खेलते हैं, कई कूदते हैं, कई नाचते हैं, कई उड़कर दिखाते हैं और कई वाणी बोलकर रिझाते हैं।

पसु पंखी सब बन में, घेरों घेर फिरत।
कई तले कई बन पर, कई विध खेल करत।। १७ ।।

इन वनों में पशु-पक्षी चारों ओर घूमते हैं। कई वनों के नीचे, कई वनों के ऊपर तरह-तरह के खेल करते हैं।

राज स्यामाजी साथ सों, खेलत हैं इन बन।
ए जो ठौर कहे सब तुमको, तुम जिन भूलो एक खिन।। १८ ।।

श्री राजश्यामाजी और सखियां इन वनों में खेलती हैं। यह खेलने के ठिकाने सब तुमको बताए हैं। इसलिए, हे मोमिनो! तुम इनको एक क्षण के लिए भी मत भूलना।

धनी कबूं देखें फेर दौड़ते, कबूं बैठ चले सुखपाल।
ए बन जमुनाजीय का, एही बन फिरता ताल।। १९ ।।

यह धनी को देखकर कभी दौड़ते हैं, कभी धनी के सुखपालों को देखकर नीचे चलते हैं। ऐसे यह सुन्दर वृक्ष जमुनाजी को तथा हौज कौसर तालाब को घेरकर आए हैं।

कबूं राज आगूं दौड़त, ताली स्यामाजी को दे।
पीछे साथ सब दौड़त, करत खेल हांसी का ए।। २० ।।

कभी श्री राजजी श्री श्यामाजी को ताली देकर दौड़ते हैं। फिर पीछे सखियां दौड़कर हंसती हैं।

महामत कहे सुनो साथजी, खिन बन छोड़ो जिन।
या मंदिरों संग धनीय के, विलसो रात और दिन।। २१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! इन वनों को एक पल के लिए मत छोड़ो। श्री राजजी महाराज के साथ वन में या मन्दिरों में सदा रात-दिन आनन्द करो।

।। प्रकरण ।। १७ ।। चौपाई ।। ९९९ ।।

परिकरमा बड़ी फिराक की

क्यों दियो रे बिछोहा दुलहा, छूटी हक खिलवत।
हम अरवाहें जो अर्स की, फेर कब देखें हक सूरत।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे श्री राजजी महाराज! आपने हमें परमधाम से क्यों अलग कर दिया? हम परमधाम की रूहें हैं। हमें फिर कब आपके दर्शन होंगे?

Nijanand App

बेसक इलम दिया अपना, आप आए के इत।
ना रह्या धोखा जरा हमको, देखाए दई निसबत।। २ ।।

आपने यहां आकर जागृत बुद्धि की तारतम वाणी दी और अपने सम्बन्ध की पहचान करा दी। जिससे अब हमको कोई संशय नहीं रह गया।

खेल देखाए उरझाए हमको, सो फेर दिया छुड़ाए।
ना तो ऐसा फरेब, कबूं किन छोड्या न जाए।। ३ ।।

खेल दिखाकर आपने हमको उलझा दिया और फिर जागृत बुद्धि देकर माया का खेल हमसे छुड़ा दिया। नहीं तो यह झूठ का खेल किसी से कभी छोड़ा नहीं गया।

हम वास्ते रसूल भेजिया, और भेज्या अपना फुरमान।
सो इत काहूं न खोलिया, मिली चौदे तबक की जहान।। ४ ।।

हमारे वास्ते आपने रसूल को कुरान देकर भेजा। उसके छिपे रहस्य यहां के चौदह लोक भी नहीं खोल सकते।

सो कुंजी भेजी हाथ रूहअल्ला, दई महंमद हकी सूरत।
कह्या आखिर आवसी अर्स रूहें, खोलो तिन बीच मारफत।। ५ ।।

उन कुरान के रहस्यों को खोलने के लिए आपने श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) के हाथ तारतम ज्ञान की चाबी भेजी जो उन्होंने हकी सूरत श्री प्राणनाथजी को दी। कुरान में लिखा है कि आखिरत के वक्त में परमधाम से रूहें आएंगी। उनके बीच मैं कुरान के रहस्य को खोलूंगा।

खिलवत संदेसे दिए रूहअल्ला, जो मेहेर कर केहेलाए।
किन खोले न द्वार अर्स के, मोको सब विध दई समझाए।। ६ ।।

परमधाम का सारा ज्ञान श्री श्यामा महारानी लाए और मेहर करके सब मुझे समझाया। आज दिन तक किसी ने परमधाम के दरवाजे नहीं खोले थे, इसलिए वह सब हकीकत मुझे बताई।

मुझे संदेसे खिलवत के, सब रूहअल्ला दई सिखाए।
बेसक इलम अर्स का, मोहे सब विध दई बताए।। ७ ।।

श्री श्यामा महारानी ने परमधाम का सब ज्ञान मुझे सिखा दिया और तारतम ज्ञान से सब हकीकत बता दी।

छूटी रूहों को अर्स की, मूल मेले की लज्जत।
इस्क न आवे क्यों हमको, जाकी नूरजमाल सों निसबत।। ८ ।।

परमधाम से खेल में आकर रूहें मूल घर की सारी लज्जत भूल गई। हम रूहें श्री राजजी महाराज के अंग हैं। तो फिर हमको श्री राजजी महाराज का इश्क क्यों नहीं आता?

फेर दई हकें मेहेर कर, मूल मेलेकी लज्जत।
क्यों न जागें रूहें ए सुनके, जाकी इन हकसों निसबत।। ९ ।।

श्री राजजी महाराज ने दुबारा मेहर करके मूल-मिलावा की पहचान कराई। वह रूहें जो श्री राजजी के अंग हैं, यह सुनकर क्यों नहीं जागतीं?

Nijanand App

बेसक इलम रूहों पाइया, अजूं नजर क्यों ना खोलत।
क्यों न आवे हमको इस्क, जाकी अर्स अजीम निसबत।। १० ।।

रूहों को तारतम ज्ञान मिल गया है फिर उनकी नजर क्यों नहीं खुलती? जो परमधाम के रहने वाले हैं उनको धनी का इश्क क्यों नहीं आ रहा है?

पेहेचान हुई सब बिध की, पाई हक मारफत।
क्यों न आवे इस्क हमको, जाकी नूरजमाल सों निसबत।। ११ ।।

जब सब तरह की पहचान हो गई और श्री राजजी का मारफत का ज्ञान मिल गया, तो श्री राजजी की अंगना होने पर भी हमें इश्क क्यों नहीं आता?

हजूर खिन एक ना हुई, इत चली जात मुद्दत।
ए क्या हक को खबर है नहीं, वह कहां गई निसबत।। १२ ।।

धनी! आपके सामने (परमधाम में) एक क्षण नहीं हुआ और यहां मुद्दतें बीत गईं हैं। क्या इसकी आपको खबर नहीं है? आपका धनीवट (पतिपन) कहां गया?

जो सुख अर्स अजीम के, सो देखाए दुनीमें इत।
भेज्या इलम बका अपना, वह कहां गई निसबत।। १३ ।।

परमधाम के सुखों को आपने दुनियां में दिखा दिया। आपने अखण्ड तारतम वाणी भेजी तो फिर हमारा अंगनापना कहां गया?

बेसुध चौदे तबकों, तामें हमको बेसक किए इत।
सुख असों के सब दिए, कर ऐसी हक निसबत।। १४ ।।

यहां गफलत में बेसुध हुए। चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में केवल हमारे संशय तारतम ज्ञान से मिटाए और क्षर, अक्षर, अक्षरातीत के सब सुख हमें अपनी अंगना जानकर दिए।

हम पर अर्स में हंसने, माया देखाई तीन बखत।
इस्क हमारा देखने, वह कहां गई निसबत।। १५ ।।

हमारा इश्क देखने के वास्ते और हम पर हंसी करने के वास्ते तीन बार माया दिखाई तो हमें फिर भी इश्क क्यों नहीं आता?

चौदे तबक आड़े देयके, सो नजीक छिपे क्यों कित।
निपट सेहेरग से नजीक, वह कहां गई निसबत।। १६ ।।

आप सेहेरग से भी नजदीक हमारे पास चौदह लोकों का परदा लगाकर छिपे बैठे हैं तो फिर हमें इश्क क्यों नहीं आता?

किन तरफ हमारे तुमहो, किन तरफ तुमारे हम।
बीच भयो क्यों ब्रह्मांड, क्यों हम पकड़ बैठे कदम।। १७ ।।

आप हमारे किस तरफ हैं और हम आपके किस तरफ हैं? यह बीच में चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड कैसे आ गया, जबकि हम आपके चरण पकड़कर बैठे हैं?

Nijanand App

पेहेले क्यों फरामोसी देयके, रूहें डारी माहें छल।
पीछे ताला कुंजी दोऊ दिए, दई खोलने की कल।। १८ ।।

रूहों को पहले फरामोशी देकर माया में क्यों भेज दिया? और पीछे कुरान और तारतम ज्ञान तथा खोलने की युक्ति सभी दे दी।

किन विध दई तुम बेसकी, सक रही न किन सब्द।
दुनियां चौदे तबक में, सुध परी न बांधी हद।। १९ ।।

आपने किस तरह से हमको जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से संशय रहित किया। इस दुनियां को तो इस बात का ज्ञान भी नहीं है कि यह ब्रह्माण्ड बनाया किसने है?

हमको सक ना हदमें, ना कछू बेहद सक।
सक रही न पार बेहद की, दिया बेसक इलम हक।। २० ।।

आपने हमको अपनी जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान दिया, जिससे हमारे क्षर, अक्षर और अक्षरातीत के सभी संशय मिट गए।

ए विध रूहें देखी जिनों, सो केहेनीमें आवत नाहें।
कछू वास्ते हम रूहनके, हुकम कहावत जुबांए।। २१ ।।

जिन रूहों ने इस हकीकत को देखा है उस हकीकत का बयान करना सम्भव नहीं है। यह तो हम रूहों के वास्ते ही श्री राजजी महाराज का हुकम कहलवा रहा है।

ए हक की मैं हुकम ले, कई विध बका द्वार खोलत।
याद देने अर्स अजीममें, होत सब वास्ते उमत।। २२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हे सुन्दरसाथजी! श्री राजजी महाराज स्वयं मेरे अन्दर बैठकर हुकम से अखण्ड परमधाम की छिपी हकीकत का ज्ञान करवा रहे हैं, ताकि परमधाम की रूहों को घर की याद आ जाए।

हमतो इत आए नहीं, अर्स एक दम छोड़्या न जाए।
जागे पीछे दुलहा, हम देख्या खेल बनाए।। २३ ।।

हम संसार में नहीं आए हैं और न ही एक पल के लिए परमधाम में श्री राजजी के चरण छोड़े हैं। जागने के बाद ही हमने समझा कि यह खेल हमारे वास्ते ही बनाकर दिखाया है।

अर्स निसबत हककी, खेल में आए बिना लेत सुख।
हिकमत देखन हक हुकम की, कही न जाए या मुख।। २४ ।।

खेल में आए बिना ही श्री राजजी महाराज की अंगना होने के सुख खेल में ले रहे हैं। यह सब श्री राजजी महाराज के हुकम की कारीगरी है जो मुख से कही नहीं जाती।

हुकमें मांग्या हुकम पे, सो हुकमैं देवनहार।
सो हुकम फैल्या सबमें हकका, सो हकै खबरदार।। २५ ।।

श्री राजजी महाराज ने स्वयं हमारे अन्दर बैठकर खुद स्वयं से खेल मंगवाया। स्वयं ही देने वाले हैं। अब श्री राजजी महाराज ने स्वयं हुकम का स्वरूप बनकर संसार को बनाया। अब स्वयं ही हमारे रक्षा करने वाले बने हैं।

Nijanand App

बिना हुकम हक के जरा नहीं, कहे सुने देखे हुकम।
किल्ली इलम हुकमें सब दई, किया तेहेकीक हुकमें खसम।। २६ ।।

यहां श्री राजजी महाराज के हुकम के सिवाय और कुछ भी नहीं है। कहने, सुनने और देखने वाला सब हुकम ही है। हुकम ने ही जागृत बुद्धि के ज्ञान की कुंजी दी और स्वयं ही यह निश्चय कराया कि श्री राजजी महाराज हमारे धनी हैं।

सुख खिलवत इन मुख क्यों कहूं, कह्या न जाए जुबांए।
ए बातें आसिक मासूक की, रूहें जानें अर्स दिल माहें।। २७ ।।

यहां संसार के मुख और जबान से परमधाम के अखण्ड सुख कहे नहीं जाते। यह बातें आशिक-माशूक अर्थात् हमारी और तुम्हारी हैं।

जो सुख खोलूं अर्स के, माहें मिलावे इत।
निकस जाए मेरी उमर, केहे न सकों खिनकी सिफत।। २८ ।।

अगर मूल-मिलावे के सुखों को खेल में बयान करने लगूं तो मेरी सारी उम्र ही निकल जाएगी और मैं एक पल की सिफत का भी बयान नहीं कर सकूंगी।

हम रूहों को चेतन किए, खोली रूह-अल्ला हकीकत।
ए खिलवत के सुख कहां गए, हम कब पावसी ए न्यामत।। २९ ।।

श्री श्यामा महारानी ने अपने तारतम ज्ञान से हकीकत को बताकर हम रूहों को सावचेत (सतर्क) किया है। तो अब याद आता है कि हमारे परमधाम के सुख कहां गए और कब मिलेंगे?

हक खिलवत सुख मोमिनों, लिखी फुरमान में मारफत।
कहां गए हमारे ए सुख, हम कब पावें ए बरकत।। ३० ।।

हे सुन्दरसाथजी! कुरान के अन्दर हमारे परमधाम के सुखों की हकीकत लिखी है। हमारे वह सुख कहां गए और फिर से कब वह सुख पा सकेंगे?

रूहें लगाइयां अपने सरूप में, और भी अपनी सिफत।
दिल अर्स मोमिन लीजियो, कहे रूह मता हुकमें महामत।। ३१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने रूहों को स्वयं अपनी पहचान कराई है और अपने इश्क की साहेबी बताई है। हे सुन्दर साथजी तुम इसकी अपने दिल में चाहना करना।

|| प्रकरण || १८ || चौपाई || १०३० ||

खिलवत से चांदनी तांईं

भोम तले की बैठाए के, खेल देखाया बांध उमेद।
हक बिना हकीकत कौन कहे, दिए बेसक इलम भेद।। १ ।।

श्री राजजी महाराज ने प्रथम भोम मूल-मिलावा में बैठाकर खेल दिखाया है। हम इस उमेद से बैठे कि खेल परमधाम जैसा होगा और हम भूलेंगे नहीं। श्री राजजी महाराज के बिना खेल की हकीकत कौन बता सकता है? इस सब हकीकत के भेदों को तारतम वाणी से समझाया।

Nijanand App